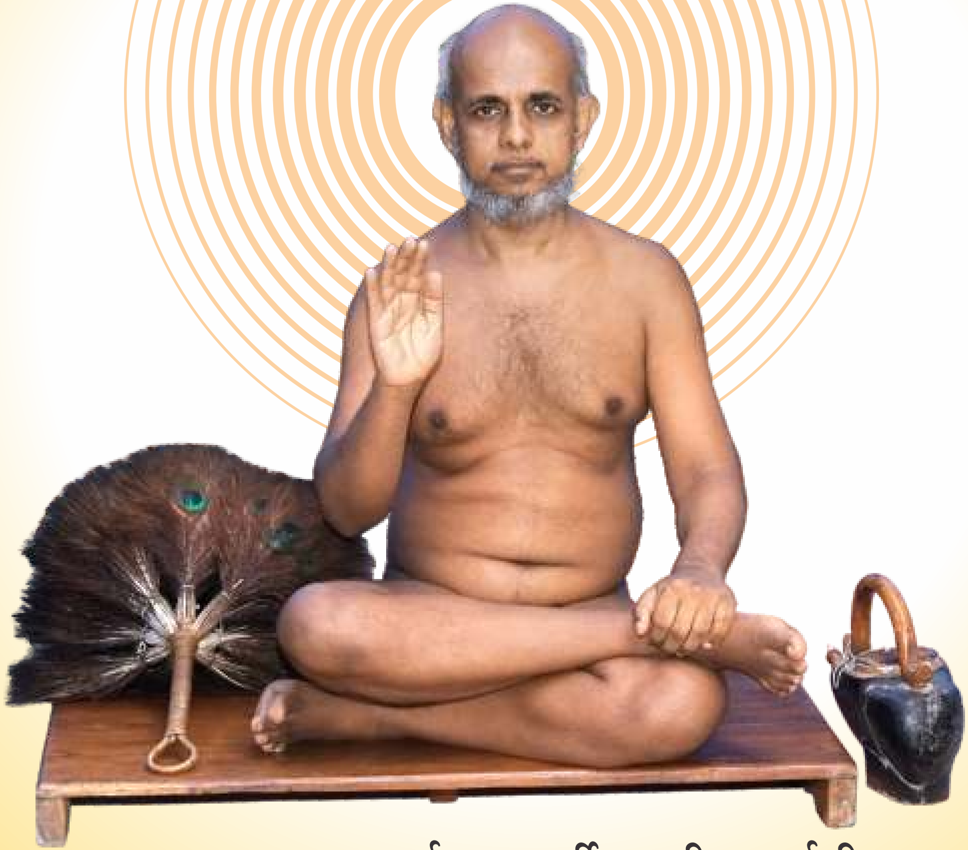

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद सुमतिनाथ विधान

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

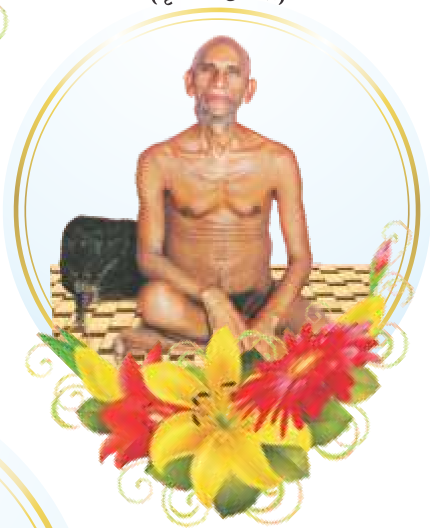

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद
सुमतिनाथ विधान

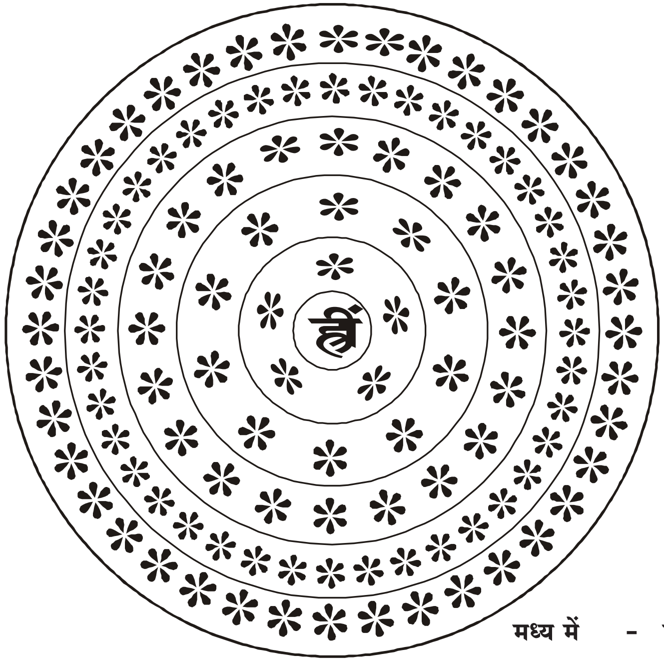

मध्य में	-	ह्रीं
प्रथम	-	5
द्वितीय	-	10
तृतीय	-	20
चतुर्थ	-	40
पञ्चम	-	40
कुल अर्घ्य	-	115

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद सुमतिनाथ विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम - 2010 प्रतियाँ -1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - सुखनन्दनजी भैया

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी आस्था, सपना दीदी

संयोजन - किरण, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल - 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
फोन : 0141-2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.)
फोन : 09993965053
3. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाश हेतु - 21/- रु.

- अर्थ सौजन्य :-

श्री पारसमल रोहितकुमार जैन

1-ड-2, विज्ञान नगर, कोटा मो. 9352621024

इंजी. पदमचन्द विनयकुमार जैन

1-र-11, विज्ञान नगर, कोटा मो. 9414187809

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

{deX gw_{VZmW {dYmZ

कृति - **विशद सुमतिनाथ विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम - 2010 प्रतियाँ -1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, सुखनन्दनजी भैया

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन - ब्र. सोनू (9829127533), किरण, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल -
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
फोन : 0141-2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.)
फोन : 09993965053
3. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाश हेतु - 21/- रु.

- अर्थ सौजन्य :-

श्री महावीर प्रसाद एवं श्रीमती मोहनी देवी जैन

(लालावास वाले)

देवीपुरा कोठी, सीकर

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

दो शब्द

"जिसका कोई गुरु नहीं, उसका जीवन शुरू नहीं।"

जीवन के संशय को समाप्त करने के लिए दिव्यज्योति प्राप्त गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है। गुरुरूपी दीपक ही हमें ज्ञानरूपी प्रकाश प्रदान कर हमारे लिए मोक्ष का मार्ग सुगम बनाते हैं। आज पूज्य आचार्यश्री के रूप में हमें ऐसे ही गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। आशा है हम उनके बताये मार्ग का अनुसरण कर अपने हृदय से विकारों को निकाल उसे परोपकार में लगाएंगे।

माँ एक बार अपने बच्चों के दुर्गुणों को नजरअंदाज कर सकती है, उस पर प्रेम का पर्दा डाल सकती है; लेकिन सच्चे गुरु उस बुराई की ओर तुम्हारा जबरन ध्यान आकर्षित कर उसे दूर करने के लिए तुम्हें मजबूर कर देते हैं। उस समय गुरु की फटकार तीर की तरह शरीर को छलनी कर देती है; परन्तु परोक्ष रूप से वही फटकार तुम्हारे लिए मोक्ष का मार्ग भी खोल देते हैं। कहा भी है-

" गुरु ज्ञान के कोष हैं, शिवपद के दातार।
जग में नौका सम कहे, करते भव से पार।।"

जब तक गुरु हमारा ध्यान विकारों की ओर आकर्षित नहीं करेगा उन्हें दूर करने का ख्याल भी हमारे हृदय में नहीं आयेगा। इसलिए मेरा मानना है कि इस जीवन रूपी मार्ग पर चलने के लिए आचार्यश्री जैसे दिव्य-चक्षु गुरु का होना परम आवश्यक है। अन्त में, मैं आचार्यश्री के चिरायु की कामना करते हुए इतना कहना चाहता हूँह्नह्न

'प्रेम जब अनन्त हो गया, रोम-रोम सन्त हो गया।
देवालय बन गया बदन, हृदय तो भगवन्त हो गया।"

प.पू. आचार्यश्री के द्वारा **'श्री सुमतिनाथ विधान'** की रचना की गई जो अपथ्य भव्य जीवों के लिए भव्य भक्ति का आधार बनेगी। लोग पुर्ण्याजन कर अपना जीवन सफल बनाएंगे।

- राजेश जैन, अलवर

श्री दिगम्बर जैन भव्योदय अतिशय क्षेत्र रैवासा, जिला-सीकर (संक्षिप्त परिचय)

अनादिनिधन प्रवाहमान दिगम्बर जैनधर्म की संस्कृति भारतवर्ष की सर्वोच्च एवं आदर्श संस्कृति रही है जो अपने सद्आचार विचारों के माध्यम से जनमानुष को सम्यक्मार्ग का दिग्दर्शन कराती रही है।

इस आदर्श जीवन्त संस्कृति के प्रवाह को निरन्तरता बनाये रखने हेतु जिनमंदिरों में एवं जिन प्रतिमाओं के रूप में वास्तुकाल का कीर्तिमान स्थापित होता रहा है। मुख्य रूप से जिन मंदिरों में तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ दिगम्बर जैनधर्म की आध्यात्मिक वास्तुकला का इतिहास शाश्वत रूप से स्वर्णांकित करती रही हैं अर्थात् जैन धर्मावलम्बी अनादिकाल से जिन मंदिर बनवाकर यथासमय जिन प्रतिमाएँ विराजमान करते आये हैं।

काल के थपेड़ों एवं आततताईयों के अत्याचारों के कारण यह परम पावन कलाकृतियाँ धराशायी हुई हैं। भारत में जगह-जगह जमीन के अन्दर से जिन मंदिर एवं प्रतिमाओं का निकलना इस बात का साक्षी है।

धर्म-संस्कारों से संस्कारित भारतवर्ष के राजस्थान प्रान्त की पावन भूमि के भूगर्भ से समय-समय पर जिन मंदिर एवं जिन प्रतिमाएँ निकलती रही हैं जो अपने अतिशयता के कारण श्रद्धा का आलम्बन बनती रही हैं।

राजस्थान के अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, श्री तिजाराजी, श्री पद्मप्रभुजी आदि इन्हीं भूगर्भ से प्राप्त अतिशयकारी प्रतिमाओं के कारण क्षेत्र अतिशयता को प्राप्त हुए हैं। राजस्थान की यह रत्नगर्भा भूमि ऐसी महान् अतिशयकारी प्रतिमाओं से रिक्त नहीं हुई है।

अतः इसी श्रृंखला में राजस्थान की मरुवृन्दावन सीकर नगरी के निकट अरावती पर्वत की श्रृंखला की तलहटी में अपनी भव्यता एवं ऐतिहासिकता को संजोये हुए, श्री दिगम्बर जैन भव्योदय अतिशय क्षेत्र रैवासा विद्यमान है। इसी क्षेत्र

पर वीर निर्माण संवत् 1674 (1205) में निर्मित अति भव्य आदिनाथ जिनालय है, जिसमें अतिमनोज्ञ आदिनाथजी की प्रतिमाजी विराजमान है तथा पास में विशाल नसियांजी है जिसमें चन्द्रप्रभु भगवान की पद्मासन विशाल प्रतिमा विराजमान है। उल्लेखनीय है कि यहाँ पर नसियांजी में विराजमान श्री चन्द्रप्रभु भगवान की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा राजस्थान में सर्वप्रथम सम्पन्न हुई थी।

मंदिर के निर्माण का इतिहास इस प्रकार बताया जाता है कि यहाँ दिगम्बर जैन श्रेष्ठी नथमलजी छाबड़ा परिवार सहित रहते थे। उनका घी, अनाज व कृषि का कारोबार था और भी कुछ जैन परिवार यहाँ रहते थे। यहाँ पर छोटा चैत्यालय था। सेठ नथमलजी के मन में एक दिन विचार आया कि यहाँ एक विशाल कलात्मक मंदिर बनवाया जाये जो देखने में अद्वितीय हो। मन में यह भाव आने पर उन्होंने भवन बनाने वाले कारीगर को बुलवाकर बात की तथा उसे अपना अभिप्राय समझाया और इस जगह का चयन किया गया और इसके लिये शुभ मुहूर्त दिखाकर नींव लगाने का समय तय किया गया और भूमि को समतल करने का काम शुरू कर दिया गया। नींव लगाने के 2-3 दिन पहले कारीगर सेठजी के घर गया तो देखा कि सेठजी चौकी पर बैठे हुए हैं और कर्मचारी लोग कड़ाहों में घी तपा कर कूपों में भर रहे हैं। इसी समय एक कड़ाहे में जिसके पास सेठजी बैठे हुए थे, उसमें एक मक्खी पड़ गयी तो सेठजी ने कर्मचारी से उस मक्खी को निकलवाकर फिकवा दिया तथा घी कूपों में भरवा दिया। यह देखकर उस शिल्पकार के मन में यह विचार आया कि घी में से मक्खी निचौड़कर फेंकने वाला यह मक्खीचूस सेठ इतना विशाल मंदिर कैसे बनवायेगा सो उसने सेठजी की परीक्षा लेने की सोची तथा सेठजी से कहा कि परसों मंदिर की नींव लगाने का मुहूर्त है उस समय नींव में डालने के लिये एक सौ आठ कूपे घी के लगेंगे तो सेठजी ने कहा कि हमारे यहाँ तो घी का ही कारोबार है सो यह कूपे तैयार हैं और तीसरे दिन मुहूर्त के समय सेठजी कूपों के साथ वहाँ उपस्थित हो गये। एक कूपा सेठजी को तथा एक सेठानीजी को पकड़वाकर नींव के पास खड़ा कर दिया तथा बाकी एक सौ छह कूपें अपने आदमियों को देकर खड़ा कर दिया तथा सेठजी से

कहा कि मैं जब बोलूँ कि घी डालो तब फौरन घी डाल देना, उसमें बिल्कुल देरी नहीं होनी चाहिए। अगर उस समय आप सबने घी नहीं डाला तो आपका मंदिर नहीं बनेगा। अपने कर्मचारियों को उसने पहले ही समझा दिया था कि मैं जब घी डालने के लिये बोलूँ तो तुम लोग कोई भी घी मत डालना और ज्यों ही मुहूर्त का समय हुआ तो उसने कहा कि सब लोग घी डाल दो, इतना सुनते ही सेठजी ने तथा उनकी सेठानी ने घी के कूपे नींव में डाल दिये; लेकिन बाकी सब लोग वैसे ही खड़े रह गये। यह देखकर सेठजी उन पर चिल्लाने लगे कि फौरन घी नींव में डाल दो; लेकिन कारीगर ने कहा कि सेठजी अब आपका मंदिर बन जायेगा। मैं तो यह घी डलवाकर आपकी परीक्षा ले रहा था; क्योंकि जब मैं आपके पास आया था तो आपने कड़ाही के घी में जो मक्खी पड़ गई थी, उसे निचोड़कर फैंक दी थी तब मैंने सोचा यह सेठ इतना विशाल मंदिर कैसे बनवा पायेगा? इसलिये मैंने घी डलवाकर परीक्षा लेने की सोची पर आप उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये। इस पर सेठजी हँसने लगे और कहा कि हम बनिये हैं, हमारा यही कारोबार है। हम एक पैसे का रोकड़ फर्क निकालने के लिये चार आने का तेल खर्च कर देते हैं; लेकिन धर्मक्षेत्र में धन को महत्त्व नहीं देते वहाँ तो मुट्ठी खोलकर खर्च करते हैं और इस तरह उस विशाल मंदिर का निर्माण शुरू हो गया। निर्माण कार्य पूरा होने वाला था तब उसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का मुहूर्त निकलवा कर तैयारियाँ शुरू कर दी गई। उन दिनों दिल्ली में भी एक मंदिर बना था और उसकी प्रतिष्ठा हो रही थी, सो उसमें भाग लेने सेठ नथमलजी भी वहाँ गये। सभा-मंडप में जब यह पहुँचे उस समय भगवान को वेदी में विराजमान करने की डाक बोली जा रही थी, डाक रुपयों में बोली जा रही थी तो मंडप में एक आवाज आई कि डाक मोहरों में शुरू की जाये और डाक की बोली मोहरों में शुरू हो गई। बोली बढ़ती जा रही थी, लोग आश्चर्यचकित थे कि बोली इतनी कौन बढ़ा रहा है। संयोजकों ने देखा कि एक गँवार सा देहाती आदमी जो घुटनों तक की मोटी धोती पहने हुए हैं। एक मैली सी अंगरखी पहने पगड़ी बाँधे हुये फटीचर सा दिखने वाला आदमी यह बोली बढ़ा रहा है। यह इतनी मोहरें कहाँ से देगा, लगता है कि

इसका दिमागी संतुलन ठीक नहीं है। यह सोचकर उन्होंने घोषणा करवाई कि बोली की राशि यहीं नगदी ली जायेगी। बढ़ने वाली बोली एक हजार मोहरों पर नथमलजी के नाम गई।

तब सेठ नथमलजी ने समाज से एक बड़ा थाल और एक कैंची लाने को कहा। थाल तथा कैंची आने पर थाल में हाथ रखकर अंगरखी की बाँह का टांका काटने को कहा। ज्यों ही अंगरखी की बाँह का टांका काटा गया उसमें से मोहरें निकलकर थाल में पड़ने लगी। एक हाथ की मोहरें जब निकल गई तो दूसरे हाथ का टांका कटवाया और उसकी मोहरें भी थाल में इकट्ठी हो गई। तब सेठजी ने संयोजकों से कहा कि आप लोग मोहरें गिन लीजिये, अगर कम हो तो मुझे बताइये मैं और दूँगा और ज्यादा हो तो आप लोग ही रख लेवें। यह दृश्य दिल्ली तथा दूर-दूर से आये हुये लोग उत्सुकता से देख रहे थे और सब आश्चर्यचकित हो रहे थे। उस सभा में एक बहुत बड़ा चारण भाट भी यह देख रहा था और उनमें भरी सभा में एक-एक सैर बनाकर सुनाया, यथा-

नथमल छाना ना रह्या, दिल्ली मण्डल मांय।
रैवासा में जनमिया, वंश छाबड़ा मांय।।

तब उस खचाखच भरी सभा मण्डप में सेठ नथमलजी ने खड़े होकर हाथ जोड़कर सबसे प्रार्थना की कि मैंने अपनी जन्म भूमि रैवासा में भगवान का एक छोटा सा झोंपड़ा बनवाया है और उसकी प्रतिष्ठा अब से दो महीने बाद होगी उस वक्त सब लोग परिवार सहित पधारकर मुझे कृतार्थ करें। लोग मन ही मन सोचने लगे कि यह छोटा सा झोंपड़ा कैसा होगा?

निश्चित मुहूर्त पर प्रतिष्ठा प्रारम्भ हो गई और दिल्ली से ही नहीं पूरे भारतवर्ष से इस विशाल मंदिर के महोत्सव को देखने के लिये उमड़ पड़े। पूरे भारत में बड़े-बड़े पंडित, श्रेष्ठी और सामान्यजन आये और इस आयोजन को देखकर चकित रह गये। इसके अतिशय की चर्चा चारों ओर फैलने लगी। कहते हैं कि इस मंदिर में रात को देवतागण आते हैं जिनके वादायगी और नुपूरों की

{deX gw_{VZmW {dYmZ

आवाज बहुत लोगों ने सुनी, चौकीदार लोग भी बताते थे कि रात को घुँघरू-बाजों की आवाज बहुत दफे सुनाई देती है। इस मंदिर के भीतर कोई नहीं सोता था। कहते हैं कि एक चौकीदार एक रात को मंदिर में चटाई बिछाकर सो गया; लेकिन जब वह सुबह उठता है तो देखता है कि वह मंदिर के नीचे खटिया पर सोया हुआ है, यह कैसे हुआ? सुबह उसने गाँववालों को यह बात बताई। दूसरे दिन जब वह मंदिर से बाहर सोया हुआ था तो उसे लगा कि उससे कोई कह रहा है कि अब कभी भीतर मत सोना।

इस तरह यहाँ कई अतिशयपूर्ण घटनाएँ हुई हैं। एक बार मुगल बादशाह औरंगजेब ने भी इस मंदिर के बारे में सुना और वह इस मंदिर को लूटने के लिये एवं खण्डित करने के लिये सेना के साथ चल पड़ा। औरंगजेब को सेना सहित आता हुआ जानकर श्रावकों ने उसके भय से श्रीजी को तलघर में विराजमान कर दिया; लेकिन बादशाह तथा उसकी सेना ज्यों ही मंदिर के निकट पहुँची, बादशाह और उसकी सेना को मधुमक्खियों ने घेर लिया तथा उनके शरीर को काटने लगी। बादशाह और उसकी सेना पीड़ा से छटपटाने लगी तथा भाग खड़ी हुई और इस तरह वह संकट टल गया। कहते हैं कि इस तरह की कई चमत्कारपूर्ण घटनाएँ यहाँ हुई हैं। इस प्राचीन जैन मंदिर की एक विशेषता यह कि इसमें स्थित खम्भों की गिनती कोई सही ढंग से नहीं कर पाया। वही व्यक्ति एक बार के बाद दोबारा गिनता है तो कम या अधिक गिन लेता है। इस चमत्कार के कारण यह अनगिनत खम्भों वाला मंदिर के नाम से विख्यात रहा है। यहाँ एक और अद्भुत अतिशय हुआ कि चार बार शान्तिनाथजी की पीतल की प्रतिमा चोर ले गये; लेकिन कुछ दिन बाद पुनः वापिस आकर वेदी पर विराजमान हो गये।

इस प्रकार अतिशयों की श्रृंखला में एक और महान् अतिशय इस प्रकार हुआ। यह पावन पवित्र भूमि सैकड़ों वर्षों से अपने भूगर्भ में पवित्र तीर्थंकर सुमतिनाथ भगवान की प्रतिमा को सुरक्षित किये हुए थी। तीर्थंकरों के अवतरण के पूर्व आने का संकट स्वप्न आदि के माध्यम से प्राप्त होता है। इसी नियति के

तहत इस अतिशय प्रसूता पावन भूमि से प्रकट होने वाली इस अलौकिक अतिशयकारी जिन प्रतिमा ने भी फाल्गुन शुक्ला दूज वीर निर्वाण संवत् 2474 की रात्रि को ब्रह्ममुहूर्त में सुदर्शन नामक एक साधारण व्यक्ति को इस असाधारण प्रतिमा ने दर्शन दिये तथा स्वप्न में ही यक्ष ने इस व्यक्ति के लिये उस स्थान का भी दिग्दर्शन किया जिस भूगर्भ में यह प्रतिमा विराजमान थी।

प्रातःकाल उठकर उस व्यक्ति ने समाज के श्रेष्ठियों को स्वप्न के अलौकिक दृश्य का बखान किया तदनुसार उस भूमि की पूजन आदि करके खुदाई शुरू की गई। पाँच सात फीट खोदने के बाद फाल्गुन शुक्ला तीज वीर निर्वाण संवत् 2474 की दोपहर के समय में पाँचवें तीर्थंकर सुमतिनाथ भगवान की मनोहारी प्रतिमा का दर्शन हुआ। चारों तरफ लोगों में हर्ष की लहर फैल गई। हजारों व्यक्ति दर्शन को आने लगे; लेकिन राजकीय सत्ता की प्रतिकूलता के कारण उसका अधिक प्रचार-प्रसार न करके उसे मंदिर की परिक्रमा में स्थित तलघर में विराजमान कर दी गई।

कुछ विशिष्ट व्यक्ति प्रतिदिन एक बार तलघर में जाकर अभिषेक पूजन कर देते थे। तलघर का बन्दीपना भी प्रतिमा को स्वीकार नहीं था, इसलिये मानो प्रतिमा ने ही अतिशय दिखाया हो, देश की गुलामी की जंजीरे टूटने लगी। 15 अगस्त 1947 को जैसे ही आजादी का शंखनाद हुआ वैसे ही लोगों ने अपने आराध्य को तलघर से निकालकर मंदिर की वेदी पर विराजमान कर स्वतंत्रतापूर्वक पूजन करने लगे।

इस क्षेत्र एवं प्रतिमा के दर्शन के अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती तथा इस प्रतिमा के अतिशय को बताते हुए इस क्षेत्र की भव्यता को दृष्टिगत रखकर इस क्षेत्र का नाम 'श्री दिगम्बर जैन भव्योदय अतिशय क्षेत्र रैवासा रखा तथा शेखावाटी के भव्यजनों को सम्बोधित किया कि भूगर्भ से प्राप्त सुमतिनाथ भगवान की प्रतिमा का इतना अतिशय है कि यह क्षेत्र श्री महावीरजी, तिजारा, पद्मपुरा के समान अतिशयकारी क्षेत्र बनकर भव्य जीवों की आधि-व्याधि,

{deX gw_{VZmW {dYmZ

ताप-संताप को दूर कर अतिशय पुण्यार्जन प्राप्त करने में निमित्त बन सकता है। मुनिश्री ने इस क्षेत्र के वास्तुकार के अनुसार दोषों को हटवाकर जीर्णोद्धार की प्रेरणा दी, तदनुसार जीर्णोद्धार हुआ।

सीकर दिगम्बर जैन समाज की वर्षों की साधना, आराधना के फलस्वरूप 1998 का वर्षायोग सीकर में हुआ। इस वर्षायोग के समापन के उपरान्त उस क्षेत्र पर दिनांक 28.10.1998 से 5.11.1998 तक अष्टाह्निका पर्व में वृहद् स्तर पर श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान के शुभ अवसर पर भूगर्भ से प्राप्त सुमतिनाथ भगवान की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव विशाल स्तर पर मनाया गया। इस अवसर पर अतिशयकारी चमत्कारी प्रतिमा का प्रथम बार 1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक कर नवीन वेदी पर विराजमान की गई। सुमतिनाथ भगवान की चरण-स्थली स्थापित की गई।

उद्देश्यह्ह (1) प्राचीन दिगम्बर जैन संस्कृति की रक्षा करना। (2) क्षेत्र को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना। (3) प्राचीन हस्तलिखित जैन शास्त्रों की सुरक्षा एवं शास्त्र भण्डार की स्थापना करना। (4) जैन साहित्य का प्रकाशन व विक्रय केन्द्र की स्थापना करना। (5) श्रवण संस्कृति की रक्षा करना। (6) त्यागी व्रती आश्रम की स्थापना करना। (7) असहाय जैन छात्रों की शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति की व्यवस्था प्रदान करना। (8) श्री दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द मूलाम्नाय की रक्षा करना। (9) असहाय व्यक्तियों की चिकित्सा शिक्षा की व्यवस्था करना।

प्रस्तावित योजनाएँ :-

1.	श्री 1008 सुमतिनाथ उद्यान	1,51,000/-
2.	श्री नसियांजी में बाउण्ड्री वाल प्रति 10 फुट लम्बाई	1,501/-
3.	नसियांजी की सम्पर्क सड़क का निर्माण कार्य	5,00,000/-
4.	चौबीसी नसियाँजी में बिजली फीटिंग	1,51,000/-
5.	मूल मंदिर का फर्श	1,51,000/-

6.	मूल मंदिर की परिक्रमा	1,51,000/-
7.	मंदिर का जीर्णोद्वार (वारादड़ी)	11,00,000/-
8.	प्रत्येक वेदी पर शिखर प्रतिवेदी (नशियांजी चौबीसी में)	21,000/-
9.	भोजनालय सदस्य 365 प्रति सदस्य आजीवन	5,100/-
10.	औषधालय सदस्य आजीवलन	5,100/-
11.	स्वागत कक्ष	2,51,000/-
12.	100 बिस्तर सेट पलंग सहित प्रति सेट	1,500/-
13.	धर्मशाला में कमरा प्रति कमरा (साधारण)	71,000/-
14.	धर्मशाला में कमरा प्रति कमरा (सुविधायुक्त)	11,000,00/-

पूजन फण्ड चौबीसी के लियेह्नह्न

1.	परम शिरोमणि उपासक सदस्य आजीवन	5,100/-
2.	शिरोमणि उपासक सदस्य आजीवन	2,100/-
3.	उपासक सदस्य आजीवन	1,100/-
4.	स्थाई पूजन फण्ड	501/-

नोट- यह क्षेत्र भारतवर्ष में दिगम्बर जैन समाज का है अतः भारतवर्ष का कोई भी दिगम्बर जैन बन्धु कमेटी के विधानानुसार सदस्य बन सकता है।

ट्रस्टी बनने की नियमावलीह्नह्न

ट्रस्टी बनने की निर्धारित राशि निम्न प्रकार है :-

(चार किश्तों में, चार साल में)

1.	परम शिरोमणि संरक्षक	2,00,000/-
2.	परम संरक्षक	1,00,000/-
3.	संरक्षक	51,000/-
4.	आजीवन सदस्य	11,000/-

{deX gw_{VZmW {dYmZ

छत्र चढ़ाने की व्यवस्थाह्नह्न

प्रथम	1,101/-
द्वितीय	501/-
तृतीय	101/-
चतुर्थ	51/-
पंचम	21/-

5 दीपकह्नह्न

रत्नदीप बड़ा	101/-
स्वर्ण दीप मध्यम	51/-
रजतदीप छोटा	21/-

नोट- यह क्षेत्र राजस्थान के सीकर नगर से 18 किमी. सीकर-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। रेल्वे स्टेशन गोरियाँ से 4 किमी. है।

प्रबन्ध समिति

परम संरक्षक	श्री अशोक कुमार पाटनी (आर.के. मार्बल, किशनगढ़)
अध्यक्ष	श्री निर्मलकुमार झांझरी (डीमापुर)
कार्यकारी अध्यक्ष	श्री दीपचन्द काला (दांतावाले) सीकर, फोन-252802
वरिष्ठ उपाध्यक्ष	श्री विमलकुमार छाबड़ा (रैवासा वाले) कोलकाता, फोन-22320024
उपाध्यक्ष	श्री सोहनलाल रांवका (मढ़ा भीमसिंह) फोन-258323
महामंत्री	श्री नृपेन्द्रकुमार छाबड़ा (रैवासा वाले) फोन-2363292

मंत्री	श्री जीवनलाल बड़जात्या, सीकर फोन-255883
संयुक्त मंत्री	श्री महावीरप्रसाद ठोलिया, सीकर फोन-252721
कोषाध्यक्ष	श्री महेशकुमार काला (भगतपुरा वाले) फोन-256580
व्यवस्था मंत्री	श्री महेन्द्रकुमार ठोलिया, रैवासा फोन-222006
निर्माण मंत्री	श्री जयकुमार छाबड़ा, सीकर फोन- 250692
प्रचार मंत्री	श्री रामेश्वरलाल छाबड़ा (दूदवा वाले) फोन-256100
विधि मंत्री	श्री जे.के. जैन, जयपुर
भोजन व्यवस्था मंत्री	श्री विजयकुमार टोंग्या, सीकर फोन-253374
सदस्य	श्री कन्हैयालाल सेठी, औरंगाबाद
	श्री कजुलाल रारा, सीकर
	श्री ज्ञानचन्द झांझरी, जयपुर
	श्री धरमचन्द बड़जात्या, फतेहपुर
	श्री निहालचन्द पहाड़िया, किशनगढ़
	श्री शांतिलाल पापड़ीवाल, जयपुर
	श्री चिरंजीलाल गंगवाल, खाचरियावास

***

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्यह्वह्व **ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।**

जयमाला

दोहा– मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
"विशद" भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री सुमतिनाथ पूजन

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

मोक्ष मार्ग के अनुपम नेता, करते हैं जग का कल्याण।
तीन लोक में मंगलकारी, जिनका गाते सब यशगान।
प्रासुक निर्मल जल के द्वारा, करते हम उनका अर्चन।
जन्म जरा के नाश हेतु हम, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व में सर्वद्रव्य के, ज्ञाता श्री जिन देव कहे।
विशद विनय के साथ चरण में, वन्दन करते भक्त रहे।
परम सुगन्धित चन्दन द्वारा, करते हम प्रभु का अर्चन।
भव संताप नाश करने को, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनि गणधर विद्याधर, का जो करते आराधन।
मुक्ति पाने हेतु करते, मूलगुणों का जो पालन।
ललित मनोहर अक्षय अक्षत, से करते प्रभु का अर्चन।
अक्षय पद को पाने हेतु, भाव सहित करते वन्दन।।

{deX gw_{VZmW {dYmZ

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर से पार लगाने, हेतू अनुपम पोत कहे।
विशद मोक्ष के पथ पर जिसने, अथक काम के बाण सहे।
वकुल कमल कुन्दादि पुष्प से, करते हम उनका अर्चन।
काम बाण विध्वंश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके ध्यान और चिन्तन से, मिटती भव की पीड़ाएँ।
भूत प्रेत नर पशु शांत हो, करते मनहर क्रीड़ाएँ।।
बावर फैनी मोदक आदि, से जिनका करते अर्चन।
क्षुधा वेदना नाश होय मम, करते हम शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद ज्ञान उद्योतित करते, मोह तिमिर हरने वाले।
मोक्ष मार्ग के राही चरणों, गुण गाते हो मतवाले।
घृत के दीप जलाकर करते, जिनवर के पद में अर्चन।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मोही होकर के प्रभु ने, मोह पास का नाश किया।
काल अनादि से कर्मों का, बन्धन पूर्ण विनाश किया।
अगर तगर की धूप बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की श्रेष्ठ साधना, कर उत्तम फल पाया है।
चतुर्गति का भ्रमण त्यागकर, शिवपुर धाम बनाया है।

श्री फल, केला, लौंग, इलायची, से करते प्रभु का अर्चन।
मोक्ष महाफल प्राप्त हमें हो, करते हम शत्-शत् वन्दन।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिला पर वास हेतु प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए।
क्षायिक ज्ञान प्रकट कर अनुपम, पद अनर्घ में वास किए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करता मैं सम्यक् अर्चन।
पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

द्वितिया शुक्ल माह श्रावण की, मात मंगला उर आए।
सुमतिनाथ की भक्ति में रत, देव सभी मंगल गाए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल एकादशि को प्रभु, जन्में सुमतिनाथ भगवान।
जय जयगान हुआ धरती पर, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी नौमी पावन, श्री सुमतिनाथ दीक्षाधारी।
श्री शिवसुख देने वाली है शुभ, सर्व जगत् मंगलकारी।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

चैत शुक्ल एकादशी जानो, सुमतिनाथ तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभु जी पाये, समवशरण सुर नाथ रचाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी एकादशी आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
सुमतिनाथ जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ती पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिवपद के धारी।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - मति सुमति करके प्रभु, हो गये आप निहाल।
सुमतिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(सखी छन्द)

जय सुमतिनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तुम हो मुक्ति पथगामी, तुम सर्व लोक में स्वामी।।
प्रभु हो प्रबोध के दाता, जग में जन-जन के त्राता।
तुम सम्यक् ज्ञान प्रदाता, इस जग में आप विधाता।।
है समवशरण सुखकारी, भविजन को आनन्द कारी।
शुभ देवों की बलिहारी, करते हैं अतिशय भारी।।

वह प्रातिहार्य प्रगटाते, भक्ति कर मोद मनाते।
परिवार सहित सब आते, अर्चा करके हर्षाते।।
सुनते जिनवर की वाणी, जो जन-जन की कल्याणी।
प्रभु वीतराग विज्ञानी, आनन्द सुधामृत दानी।।
तुमरी महिमा हम गाते, प्रभु सादर शीश झुकाते।
हम चरण-शरण में आते, आशीष आपका पाते।।
जब से तव दर्शन पाया, प्रभु जी श्रद्धान जगाया।
फिर भेद ज्ञान को पाया, हमने यह लक्ष्य बनाया।।
हम भी सौभाग्य जगाएँ, प्रभु मोक्ष मार्ग अपनाएँ।
तव चरणों शीश झुकाएँ, रत्नत्रय निधि पा जाएँ।।
बनके सम्यक् तपधारी, हो जावें हम अविकारी।
हम बने प्रभु अनगारी, है विशद भावना भारी।।
प्रभु कर्म निर्जरा होवे, अघ कर्म हमारे खोवे।
मम आतम भी शुचि होवे, सब कर्म कालिमा धोवे।।
प्रभु अनन्त चतुष्टय पावें, तव केवल ज्ञान जगावें।
फिर शिवपुर को हम जावें, अरू मुक्ति वधु को पावें।।
हम यही भावना भाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।
हम भाव सहित गुण गाते, प्रभु द्वार आपके आते।।

(छन्द घत्तानन्द)

तुम हो हितकारी, सब दुखहारी,सुमतिनाथ जिनअविकारी।
हे समताधारी ! ज्ञान पुजारी, मोक्ष महल के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - सर्व कर्म को नाशकर, बने मोक्ष के ईश।
'विशद' ज्ञान पाने प्रभु, चरण झुकाएँ शीश।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः

दोहा- सुमतिनाथ की वन्दना, करते पञ्च कुमार।
भव्य जीव कर अर्चना, होते भव से पार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पञ्चकुमार से पूज्य जिनेन्द्र

(रोला छन्द)

सुख-शांति हो आनन्द, जीवन हो पावन।
हे वास्तु कुमार ! सुदेव, करते आह्वानन।।
जिन पूजा को हे देव ! तुम भी तो आओ।
तुम सभी नशाओ विघ्न, यहाँ पर आ जाओ।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वास्तुकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे वायु ! जाति के देव, वायु मन्द चलाओ।
है जिनवर का आह्वान, भूमि स्वच्छ कराओ।।
जिन पूजा को हे देव ! तुम भी तो आओ।
तुम सभी नशाओ विघ्न, यहाँ पर आ जाओ।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वायुकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे मेघकुमार ! सुदेव, सारे विघ्न हरो।
वर्षा कर जल की धार, भू प्रच्छाल करो।।
जिन पूजा को हे देव ! तुम भी तो आओ।
तुम सभी नशाओ विघ्न, यहाँ पर आ जाओ।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री मेघकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे अग्नि कुमार ! सुदेव, यहाँ पर तुम आओ।
विघ्नों का करो विनाश, प्रभु के गुण गाओ।।
जिन पूजा को हे देव ! तुम भी तो आओ।
तुम सभी नशाओ विघ्न, यहाँ पर आ जाओ।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्निकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नागकुमार ! सुदेव, नागों के स्वामी।
जिन भक्ति करो सहर्ष, बनो तुम अनुगामी।।
जिन पूजा को हे देव ! तुम भी तो आओ।
तुम सभी नशाओ विघ्न, यहाँ पर आ जाओ।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री नागकुमारदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कुमार भक्त जिनवर के, करते हम उनका आह्वान।
विघ्न नशाओ तुम आकर के, करो प्रभु का अब गुणगान।।
यज्ञ में शामिल होकर तुम भी, प्राप्त करो अपना अनुभाग।
विशद भाव से पूजा कर लो, चरणों में करके अनुराग।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री पंचकुमार !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- जिन पूजा को भाव से, आते दश दिग्पाल।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, वन्दन करें त्रिकाल।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दश दिग्पाल से पूज्य जिनेन्द्र

गजारुढ़ हो देव पूर्व से, शचि इन्द्र कई साथ महान्।
अक्षत शस्त्र कोटि ले हाथों, शोभित होता सूर्य महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, रवि इन्द्र का है आह्वान।
पूर्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री रवि इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ दैदीप्यमान ज्वालायुत, आग्नेय से अग्निदेव।
उठती हैं स्फुलिंगे जिसमें, शक्ति हस्त से युक्त सदैव।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, अग्नि इन्द्र का है आह्वान।
आग्नेय दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्निदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुभट प्रचण्ड दण्ड बाहुयुत, चण्डान्वित मुद्दण्ड कोदक।
छाया कटाक्षद्यति भासमान शुभ, लोलाय बाहयत श्रेष्ठ अखण्ड।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, सुर यमरेन्द्र का है आह्वान।
दक्षिण दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री यमरेन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृक्ष देह व्यंजित ऋक्षाक्षत, रत्नकांति सम आभावान।
ऋक्षारुढ़ अस्त्र मुद्गर ले, अतिशय उज्ज्वल कांतिमान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, नैऋत्य देव का है आह्वान।
नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री नैऋत्य देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकरारुढ़ अस्त्र परिवेष्टित, नागपास ले अपने साथ।
मुक्तामय कल्पित है अनुपम, सुन्दर द्रव्य लिए हैं हाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, वरुण देव का है आह्वान।
पूर्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वरुणदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामहिज आयुध ले हाथों, अश्वारुढ़ शक्तिधारी।
वायुवेग विलाश भूषान्वित, वायव्यकोण का अधिकारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, पवन इन्द्र का है आह्वान।
वायव्य दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री पवनेन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नोज्ज्वल पुष्पों से शोभित, देवि धनादि को ले साथ।
उत्तर से विमान पर चढ़कर, धनपति कई इन्द्रों का नाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, कुबेर इन्द्र का शुभ आह्वान।
उत्तर दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री कुबेर इन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जटा मुकुट वृषभादिरूढ़ हो, गिरिवर पुत्री को ले साथ।
धवलोज्ज्वल अंगों का धारी, शुभ त्रिशूल ले अपने हाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, धन का शुभ आह्वान।
ईशान दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री धनेन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायु वेग वेगार्जित निज के, धरणेन्द्र पद्मावती का ईश।
उच्च कठोर कूर्म आरोही, अधोलोक का है आधीश।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, धरणेन्द्र का शुभ है आह्वान।
अधो दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री धरणेन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चटाटोप चल शौर्य उदारी, मूर्ति विदारित है विकराल।
सिंहारुढ़ मदभ्र कांतियुत, रोहणीश करता नत भाल।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, सोम इन्द्र का है आह्वान।
ऊर्ध्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सोमइन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं दिक्पाल इन्द्र रवि आदि, दश प्रकार के महति महान्।
दशों दिशाओं के रक्षक हैं, विघ्न नाश करते पद आन।।
सुमतिनाथ के चरण कमल की, अर्चा करते हैं शुभकार।
विशद भाव से गुण गाते हैं, वन्दन करते बारम्बार।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सर्वदिग्पालदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा- **सौधर्मादि स्वर्ग के, लौकान्तिक भी देव।**
जिन अर्चा में नित्य प्रति, तत्पर रहें सदैव।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सौधर्मादि इन्द्रों द्वारा पूज्य जिनेन्द्र

(चाल : टप्पा)

सौधर्मेन्द्र स्वर्ग से चलकर, ऐरावत पर आवे।
श्रीफल आदि से पूजाकर, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सौधर्मेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजारुढ़ ईशान इन्द्र भी, पूँगी फल ले आवे।
सह परिवार अर्चना करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ईशानेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहारुढ़ सुकुण्डल मण्डित, सनत कुमार भी आवे।
आम्रफलों से पूजा करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सानतकुमार इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वारुढ़ माहेन्द्र इन्द्र भी, केले लेकर आवे।
सहपरिवार अर्चना करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री माहेन्द्र इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म स्वर्ग से ब्रह्म इन्द्र भी, हंसारुढ़ हो आवे।
पुष्प केतकी से पूजाकर, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री ब्रह्मेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र भक्ति से मण्डित, श्री जिन के गुण गावे।
दिव्य फलों से पूजा करके, उत्सव महत् मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री लान्तवेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र चढ़कर चकवा पर, पुष्प सेवन्ती लावे।
श्रेष्ठ द्रव्य से पूजा करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री शुक्रेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र कोयल पर चढ़कर, जिन चरणों में आवे।
नील कमल से पूजा करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री शतारेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गरुड़ारुढ़ इन्द्र आनत भी, पनस दिव्य फल लावे।
सह-परिवार दिव्य अर्चाकर, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आनतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म विमानारुढ़ चरण में, प्राणतेन्द्र भी आवे।
तुम्बरु फल से पूजा करके, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री प्राणतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुद यान पर आरणेन्द्र पद, गन्ने लेकर आवे।
निज परिवार सहित पूजाकर, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आरणेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र चढ़कर मयूर पर, जिन चरणों में आवे।
श्रीफल आदि से पूजाकर, उत्सव महत मनावे।।
भाई जिनवर के गुण गावे।
सुमतिनाथ की पूजा करके, मन ही मन हर्षावे।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अच्युतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक देवों से पूज्य जिनेन्द्र

(शम्भू छन्द)

ब्रह्म लोकवासी सारस्वत, देव चरण में आते हैं।
जिनवर के वैराग्य भाव की, श्रेष्ठ भावना भाते हैं।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सारस्वत देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकान्तिक आदित्य देव शुभ, जिन अर्चा को आते हैं।
दिनकर की भाँति पूरब से, निज आभा बिखराते हैं।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री आदित्यदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि देव आग्नेय कोण से, भाव बनाकर आते हैं।
ब्रह्मलोक में रहने वाले, बह्म इन्द्र कहलाते हैं।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्निदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरुण देव लौकान्तिक भाई, जिन पद में झुक जाते हैं।
कर प्रणाम चरणों में प्रभु के, नित नये मंगल गाते हैं।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अरुणदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्दतोय लौकान्तिक आके, करते वन्दन बारम्बार।
भव्य भावना बारह भाते, प्रभु के चरणों में शुभकार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गर्दतोय !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुषित देव लौकान्तिक भाई, गुण गाते हैं मंगलकार।
ब्रह्म ऋषि कहलाने वाले, करें अर्चना अपरम्पार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री तुषितदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अव्याबाध सभी बाधाएँ, करते हैं आकर के दूर।
लौकान्तिक यह देव प्रभु पद, भक्ति करते हैं भरपूर।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अव्याबाधदेव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवारिष्ट कहे लौकान्तिक, ब्रह्मलोक वासी शुभकार।
उत्तर दिशा से आने वाले, वन्दन करते बारम्बार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अरिष्ट देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्मादि देव स्वर्ग के, लौकान्तिक के आठ प्रकार।
बीस देव जिनवर की अर्चा, को रहते हरदम तैयार।।
भाव सहित प्रभु अर्चा करके, हर्षित हो गुण गाते हैं।
विशद भाव से अर्चा करके, चरणों शीश झुकाते हैं।।21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सौधर्मादि !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा– भवनत्रिक के देव सब, प्रति इन्द्र भी साथ।
नर पशु के द्वय इन्द्र भी, झुका रहे पद माथ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

भवन व्यंतरवासी इन्द्र, प्रतीन्द्रों द्वारा पूज्य जिनेन्द्र

(छन्द-जोगीरासा)

इन्द्र भवन वासी देवों का, पहला असुर कुमार।
द्रव्य सजाकर पूजा करने, आता सह परिवार।।
सुमतिनाथजी हैं इस जग में, अतिशय मंगलकार।
करे भाव से पूजा जो भी, पावे भव से पार।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री असुरकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवन वासी देवों का, दूजा नाग कुमार।
द्रव्य सजाकर पूजा करने, आता सह परिवार।।
सुमतिनाथजी हैं इस जग में, अतिशय मंगलकार।
करे भाव से पूजा जो भी, पावे भव से पार।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री नागकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय इन्द्र भवनवासी का, जानो विद्युत कुमार।
द्रव्य सजाकर पूजा करने, आता सह परिवार।।
सुमतिनाथजी हैं इस जग में, अतिशय मंगलकार।
करे भाव से पूजा जो भी, पावे भव से पार।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री विद्युतकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवन वासी देवों का, चौथा सुपर्ण कुमार।
द्रव्य सजाकर पूजा करने, आता सह परिवार।।
सुमतिनाथजी हैं इस जग में, अतिशय मंगलकार।
करे भाव से पूजा जो भी, पावे भव से पार।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सुपर्णकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम इन्द्र भवन वासी, जानो अग्नि कुमार।
द्रव्य सजाकर पूजा करने, आता सह परिवार।।
सुमतिनाथजी हैं इस जग में, अतिशय मंगलकार।
करे भाव से पूजा जो भी, पावे भव से पार।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्निकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्टम इन्द्र भवन वासी का, आवे वात कुमार।
पूजा हेतु द्रव्य श्रेष्ठ शुभ, लावे सह परिवार।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा जग में, होती है शुभकार।
पुण्य प्राप्त कर मुक्ति पावे, प्राणी बारम्बार।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वातकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम इन्द्र भवन वासी का, रहा स्तनित कुमार।
पूजा हेतु द्रव्य श्रेष्ठ शुभ, लावे सह परिवार।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा जग में, होती है शुभकार।
पुण्य प्राप्त कर मुक्ति पावे, प्राणी बारम्बार।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री स्तनितकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम इन्द्र भवन वासी का, आवे उदधि कुमार।
पूजा हेतु द्रव्य श्रेष्ठ शुभ, लावे सह परिवार।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा जग में, होती है शुभकार।
पुण्य प्राप्त कर मुक्ति पावे, प्राणी बारम्बार।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री उदधिकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौवा इन्द्र भवन वासी का, आवे दीप कुमार।
पूजा हेतु द्रव्य श्रेष्ठ शुभ, लावे सह परिवार।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा जग में, होती है शुभकार।
पुण्य प्राप्त कर मुक्ति पावे, प्राणी बारम्बार।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री दीपकुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दसवाँ इन्द्र भवन वासी का, कहलाए दिक् कुमार।
पूजा हेतु द्रव्य श्रेष्ठ शुभ, लावे सह परिवार।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा जग में, होती है शुभकार।
पुण्य प्राप्त कर मुक्ति पावे, प्राणी बारम्बार।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री दिक्ककुमार देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनवासी–प्रतीन्द्र द्वारा पूजित जिनेन्द्र

(शम्भू छन्द)

इन्द्र भवनवासी देवों का, असुर कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री असुरकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, नाग कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री नागकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, विद्युत कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री विद्युतकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, सुपर्ण कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सुपर्णकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, अग्नि कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री अग्निकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, वात कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री वातकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, स्तनितकुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री स्तनितकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, उदधि कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री उदधिकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, दीप कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री दीपकुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र भवनवासी देवों का, दिक् कुमार कहलाता है।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, जिन पूजा को आता है।।
सुमतिनाथ की पूजा भाई, सब दुःख हरने वाली है।
भव्य जीव को तीन लोक में, पावन करने वाली है।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री दिक्ककुमार प्रतीन्द्र देव !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यन्तर देवों के इन्द्र से पूजित जिनेन्द्र

(चाल टप्पा)

निज परिवार सहित व्यन्तर के, किन्नरेन्द्र पद आवें।
पूजा करते हैं प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री किन्नरेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, इन्द्र किम्पुरुष आवें।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।22।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री किम्पुरुष !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, महोरगेन्द्र पद आवें।
पूजा करते हैं प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।23।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री महोरगेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, गन्धर्वेन्द्र भी आवें।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।24।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गन्धर्वेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, यक्ष इन्द्र पद आवें।
पूजा करते हैं प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।25।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री यक्षेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, राक्षसेन्द्र पद आवें।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।26।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री राक्षसेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, भूत इन्द्र पद आवें।
पूजा करते हैं प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।27।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री भूतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित व्यन्तर के, पिशाचेन्द्र पद आवें।
निज परिवार सहित प्रतीन्द्र भी, सादर शीश झुकावें।
भाई अतिशय पुण्य उपावें।
नत हो सुमतिनाथ जिनवर के, भाव सहित गुण गावें।।28।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री पिशाचेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यन्तर के प्रतीन्द्र द्वारा पूजित जिनेन्द्र

(चौपाई)

किन्नरेन्द्र व्यन्तर का जानो, प्रथम इन्द्र जिसको पहिचानो।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।29।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री किन्नरेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुषेन्द्र देव शुभ गाया, जिन पद का सेवक कहलाया।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।30।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री किम्पुरुषेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र व्यन्तर का जानो, तृतिय इन्द्र जिसे पहिचानो।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी।।31।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री महोरगेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्वेन्द्र देव शुभ गाया, चौथा इन्द्र देव कहलाया।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी ।।32।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री गन्धर्वेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र व्यन्तर का भाई, अर्चा करता है सुखदाई।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी ।।33।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री यक्षेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षसेन्द्र की महिमा न्यारी, अर्चा करता विस्मयकारी।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी ।।34।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री राक्षसेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र अर्चा को आवे, पद में सादर शीश झुकावे।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी ।।35।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री भूतेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाच इन्द्र है देव निराला, जिन पद अर्चा करने वाला।
सुमतिनाथ के पद शुभकारी, करे प्रतीन्द्र भक्ति मनहारी ।।36।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री पिशाचेन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

सतत प्रकाश ताप प्रतिभाषी, रवि विमान का है आधीश।
पल्योपम आयु का धारी, कमल हाथ ले नत हो शीश।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा करता, सूर्य महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।37।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सूर्य महाग्रह !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख वर्ष पल्लाधिक आयु, वलक्षरोचि शुभ आभावान।
महारत्न कृत उद्धत क्षेपी, श्रेष्ठ ग्रहाधिप रहा महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, सोम महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।38।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सोम महाग्रह !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह रत्न श्रेष्ठ नव निधियाँ, चक्र रत्न को पाता है।
छह खण्डों का अधिपति है, जो नरेन्द्र कहलाता है।।
बत्तिस सहस्र भूप होते हैं, छह खण्डों में महति महान्।
जिन चरणों में चक्रवर्ति भी, भाव सहित करते यशगान।।39।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री नरेन्द्र महाग्रह !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह कहा पशुओं का स्वामी, विशद इन्द्र कहलाता है।
भक्ति भाव से जिन चरणों में, सादर शीश झुकाता है।।
सुमतिनाथ के चरण कमल की, भक्ति करता अपरम्पार।
मनोयोग से वन्दन करके, अर्चा करता बारम्बार।।40।।

ॐ आं क्रों ह्रीं **श्री सिंह इन्द्र !** पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनालय व्यन्तर देवों के, इन्द्र-प्रतीन्द्र जो रहे प्रधान।
ज्योतिष वासी इन्द्र प्रतीन्द्र शुभ, नर-पशु के भी इन्द्र महान्।।
सुमतिनाथ के चरण कमल की, भक्ति करते अपरम्पार।
मनोयोग से वन्दन करके, अर्चा करते बारम्बार।।41।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री भवनवासी-व्यन्तर-ज्योतिष-इन्द्र-प्रतीन्द्र नर-पशु इन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा- दोष अठारह से रहित, दस धर्मों से युक्त।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त जिन, प्रातिहार्य संयुक्त।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।
सुमतिनाथ के पद पंकज का, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

18 दोष से रहित जिनेन्द्र

जो कर्म घातिया नाश किए, अरु केवलज्ञान प्रकाशे हैं।
वह तीन लोक में पूज्य हुए, अरु क्षुधा वेदना नाशे हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं **क्षुधारोग** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा वेदना से व्याकुल जग, जीव सताते आये हैं।
जिसने जीता यह तृषा दोष, वह तीर्थंकर कहलाये हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं **तृषादोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जन्म मृत्यु के रोगों से, सदियों से सताते आये हैं।
जो जन्म रोग का नाश किए, वह तीर्थंकर कहलाये हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं **जन्मदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अर्ध मृतक सम बूढ़ापन, उससे हम पार न पाए हैं।
अब जरा रोग के नाश हेतु, जिन चरण शरण में आए हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं **जरादोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु का रोग भयानक है, उससे न कोई बच पाते हैं।
जो जीत लेय इस शत्रु को, वह तीर्थंकर बन जाते हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं **मृत्युदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कई कौतूहल होते जग में, करते हैं विस्मय लोग सभी।
जिनवर ने विस्मय नाश किया, उनको विस्मय न होय कभी।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं **विस्मय दोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न कोई शत्रु हमारे हैं, हम हैं चित् चेतन रूप अहा।
हैं अरति दोष के नाशी जिन, उन सम मेरा स्वरूप रहा।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं **अरति दोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग जीवन क्षण भंगुर है, सब मोह बली की माया है।
जिनवर ने खेद विनाश किया, सच्चे स्वरूप को पाया है।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं **खेद दोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह तन पुद्गल से निर्मित है, कई रोगों की जो खान कहा।
वह नाश किए हैं रोग श्री, जिन पाये पद निर्वाण अहा।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं **रोगदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनका कोई इष्ट अनिष्ट नहीं, जो समता भाव के धारी हैं।
वह सर्व शोक के नाशी हैं, जिन की महिमा अति प्यारी है।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं **शोकदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि आठ महामद हैं, जो विनय भाव को खोते हैं।
जो विजय प्राप्त करते मद पर, वह तीर्थंकर जिन होते हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं **मददोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महा मिथ्या कलंक, जिससे प्राणी जग भ्रमण करे।
जो मोह महामद नाश करे, वह आतम रस में रमण करे।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं **मोहदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

{deX gw_{VZmW {dYmZ

निद्रा देवी ने इस जग के, सब जीवों को भरमाया है।
जिसने निद्रा को जीत लिया, उसने अर्हन्त पद पाया है।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं **निद्रादोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता में चित्त विलीन रहे, तो चित् का चिन्तन खो जाए।
जो खो दे चिंता की शक्ति, वह शीघ्र सिद्ध पद को पाए।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं **चिंतादोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ कर्म घातिया नाश किए, जो परमौदारिक तन पाए।
न स्वेद रहे उनके तन में, वह तीर्थंकर जिन कहलाए।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं **स्वेददोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग से नाता तोड़ा, जो वीतरागता पाए हैं।
वह राग दोष का नाश किए, अरू तीर्थंकर कहलाए हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं **रागदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनको किंचित् भी मोह नहीं, जो निज स्वभाव में लीन रहे।
वह द्वेष भाव का नाश किए, जिन धर्म तीर्थ के नाथ कहे।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं **द्वेष दोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में भय से भयभीत सभी, जो दुःख अनेकों पाते हैं।
उस भय का नाश किए स्वामी, जिन तीर्थंकर कहलाते हैं।।
हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं।
श्री सुमतिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं **भयदोष** विनाशक श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्म युक्त जिनेन्द्र

(चौपाई)

अन्दर में समता उपजाई, क्रोध नहीं करते हैं भाई।
उत्तम क्षमा धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी।।19।।

ॐ ह्रीं **उत्तम क्षमाधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में अहंकार न आवे, प्राणी समता भाव जगावे।
मार्दव धर्म हृदय में धारे, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारे।।20।।

ॐ ह्रीं **उत्तम मार्दवधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुटिल भाव मन में न आवे, सरल भाव प्राणी उपजावे।
उत्तम आर्जव धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी।।21।।

ॐ ह्रीं **उत्तम आर्जवधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके मन मूर्छा न आवे, जो संतोष भाव को पावे।
उत्तम शौच धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी।।22।।

ॐ ह्रीं **उत्तम शौचधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहें वचन जो मन में होवें, असत वचन की सत्ता खोवें।
उत्तम सत्य धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी।।23।।

ॐ ह्रीं **उत्तम सत्यधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय मन जीते दुःखदाई, प्राणी रक्षा करते भाई।
वे हैं उत्तम संयम धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी।।24।।

ॐ ह्रीं **उत्तम संयमधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छाओं को तजने वाले, द्वादश तप को तपने वाले।
वे हैं उत्तम तप के धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी।।25।।

ॐ ह्रीं **उत्तम तपधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्यों से राग हटावें, मन में समता भाव जगावें।
उत्तम त्याग धर्म के धारी, तन-मन से होते अविकारी।।26।।

ॐ ह्रीं **उत्तम त्यागधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किंचित् मन में राग न होवे, सारी इच्छाओं को खोवे।
वह आकिंचन व्रत के धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी।।27।।

ॐ ह्रीं **उत्तम आकिंचन धर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं काम भोग के त्यागी, परम ब्रह्म के हैं अनुरागी।
वे हैं ब्रह्मचर्य व्रत के धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी।।28।।

ॐ ह्रीं **उत्तम ब्रह्मचर्यधर्म** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(शम्भू छन्द)

द्रव्य और गुण पर्यायों को, एक साथ जो जान रहे।
ज्ञानावर्ण कर्म के नाशी, केवलज्ञानी आप कहे।।
सुमतिनाथ ने तीर्थंकर पद, पाकर जग कल्याण किया।
अष्ट कर्म को नाश किए फिर, आप स्वयं निर्वाण लिया।।29।।

ॐ ह्रीं **अनन्तज्ञान** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य और गुण पर्यायें सब, एक साथ दर्शाए हैं।
कर्म दर्शनावरणी नाशे, दर्शानन्त उपजाए हैं।।
सुमतिनाथ ने तीर्थंकर पद, पाकर जग कल्याण किया।
अष्ट कर्म को नाश किए फिर, आप स्वयं निर्वाण लिया।।30।।

ॐ ह्रीं **अनन्तदर्शन** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह कर्म को नाश किए प्रभु, शाश्वत सुख उपजाए हैं।
नश्वर सुख को तजने वाले, सुख अनन्त प्रगटाए हैं।।
सुमतिनाथ ने तीर्थंकर पद, पाकर जग कल्याण किया।
अष्ट कर्म को नाश किए फिर, आप स्वयं निर्वाण लिया।।31।।

ॐ ह्रीं **अनन्तसुख** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न अनेक करे जो जग में, अन्तराय दुःख दाता है।
वीर्य अनन्त प्रकट होता तो, प्राणी शिव सुख पाता है।।
सुमतिनाथ ने तीर्थंकर पद, पाकर जग कल्याण किया।
अष्ट कर्म को नाश किए फिर, आप स्वयं निर्वाण लिया।।32।।

ॐ ह्रीं **अनन्तवीर्य** प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(शम्भू छन्द)

दिव्य रत्न वैडूर्यमणि से, निर्मित शाखाएँ मृदु पत्र।
कोमल कोंपल से शोभित हैं, उप शाखाएँ भी सर्वत्र।।
हरित मणि से निर्मित पत्रों, की छाया है सघन महान्।
शोक निवारी तरु अशोक है, शोभा युक्त रही पहचान।।33।।

ॐ ह्रीं **तरु अशोक प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद से हो उन्मत भ्रमर जो, करते हैं अतिशय गुंजार।
कुन्द कुमुद अरु नील कमल शुभ, श्वेत कमल शुभ हैं मंदार।।
बकुल मालती आदि पुष्पों, से आच्छादित है आकाश।
पुष्प वृष्टि होने से लगता, मानो आया हो मधुमास।।34।।

ॐ ह्रीं **पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कड़ा स्वर्णमय और मेखला, बाजूबन्द कर्ण कुण्डल।
कमर करधनी आदि अनेकों, आभूषण शोभित मंगल।।

{deX gw_{VZmW {dYmZ

नेत्र कमल दल के समान शुभ, नेत्रों वाले यक्ष महान्।
लीला पूर्वक चंवर युगल जो, ढौर रहे हैं प्रभु पद आन।।35।।

ॐ ह्रीं **चंवर प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहित आवरण अकस्मात ही, उदित हुए हों ज्यों इक साथ।
सूर्य हजारों सम प्रकाशमय, शोभित होवें जग के नाथ।।
भेद मिटाए दिन रात्रि का, भामण्डल अति शोभावान।
सप्त भवों का दर्शायक है, करता है प्रभु का सम्मान।।36।।

ॐ ह्रीं **भामण्डल प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रबल पवन के घात से क्षोभित, ज्यों समुद्र के शब्द समान।
है गम्भीर श्रेष्ठ स्वर वाला, ज्यों प्रशस्त वीणा का गान।।
श्रेष्ठ बांसुरी आदि उत्तम, बाद्यो सहित दुन्दुभि श्रेष्ठ।
बार-बार गम्भीर शब्द जो, करते ताल के साथ यथेष्ठ।।37।।

ॐ ह्रीं **देव-दुन्दुभि प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन चन्द्रमाओं के जैसा, तीन लोक के चिह्न स्वरूप।
अनुपम मुक्त मणि की लड़ियों, से शोभित है सुन्दर रूप।।
बहुत विशाल नील मणियों से, शुभ निर्मित है दण्ड महान्।
अति मनोज्ञ आभा से संयुत, तीन छत्र हैं शोभावान।।38।।

ॐ ह्रीं **छत्रत्रय प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्ण हृदय को हरने वाली, दिव्य ध्वनि अनुपम गम्भीर।
चार कोश तक चतुर्दिशा में, श्रवण करें धारण कर धीर।।
मेघ पटल जल से पूरित ज्यों, गर्जन करता अपरम्पार।
सर्व दिशाओं के अन्तर को, व्याप्त करे होकर अविकार।।39।।

ॐ ह्रीं **दिव्यध्वनि प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों दैदीप्यमान किरणों के, रत्नों की किरणों से युक्त।
इन्द्र धनुष की कांति वाले, अनुपम हैं आभा संयुक्त।।

स्फटिक मणि की शिला से निर्मित, सिंहासन सुन्दर मनहार।
सिंहों का शुभ है प्रतीक जो, समवशरण अति मंगलकार।।40।।

ॐ ह्रीं **सिंहासन प्रातिहार्य** युत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष अठारह नाश करें जिन, पाते हैं दश धर्म महान्।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, प्रातिहार्य पाते भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, प्रभु के चरण चढ़ाते हैं।
सुमतिनाथ के चरण-कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।।41।।

ॐ ह्रीं अठारह दोष, दश धर्म, अनन्त चतुष्टय, अष्ट प्रातिहार्ययुत श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा- वात्सल्य के कोष हैं, सुमतिनाथ भगवान।
गाते हैं जयमाल हम, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

तीर्थंकर पञ्चम सुमतिनाथ, हम झुका रहे हैं चरण माथ।
श्रावण शुक्ला द्वितिया महान्, प्रभु प्राप्त किए थे गर्भकल्याण।।
तज के विमान आये जयन्त, करने कर्मों का पूर्ण अन्त।
थी मात मंगला जिनकी महान्, पितु भूप मेघरथ जग प्रधान।।
साकेतपुरी नगरी विशेष, शुभ सुमतिनाथ जन्मे जिनेश।
चकवा लक्षण प्रभु का प्रधान, दाये पग में था शोभमान।।
शुभ कार्तिक कृष्ण तेरस महान्, सब देव किए थे यशोगान।
तब देव पालकी लिए साथ, प्रभु के आगे द्वय जोड़ हाथ।
लौकान्तिक भी आये सुदेव, चरणों में विनती किए एव।।

प्रभु किया आपने जो विचार, मानव जीवन का यही सार।
राजा थे संग में इक हजार, निर्जन वन को कीन्हें विहार।।
वैशाख शुक्ल नौमी जिनेश, प्रभु ने पाया निर्ग्रन्थ भेष।।
प्रभु पञ्च महाव्रत लिए धार, उद्यान सहेतुक के मझार।
शुभ जाति स्मृति से जिनेश, वैराग्य प्रभु धारे विशेष।।
सब दीक्षा धरके हुए संत, कर्मों का करने पूर्ण अन्त।
शुभ चैत्र शुक्ल पूनम सुजान, पाया प्रभु ने कैवल्यज्ञान।।
तब समोशरण रचना विशाल, शुभदेव किए थे विनत भाल।
श्री वज्र गणी प्रभु के प्रधान, थे एक सौ सोलह सर्वमान्य।।
शुभ प्रातिहार्य प्रगटे महान्, जिनवर के आगे तब प्रधान।
फिर दिव्य देशना कर जिनेश, बतलाये मुक्ति पथ विशेष।।
सम्मेद शिखर पहुँचे जिनेश, प्रभु ध्यान किए जाके विशेष।
शुभ चैत्र शुक्ल ग्यारस महान्, प्रभु सुमतिनाथ पाए निर्वाण।।
प्रभु अष्ट कर्म का किए नाश, फिर निजानन्द में किए वास।
हम विनत झुकाते चरण माथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।
विनती अब मेरी सुनो नाथ, हम अर्घ्य चढ़ाते जोड़ हाथ।।
हमको भी भव से करो पार, ये भक्त खड़े हैं प्रभु द्वार।
हो जावें सारे कर्म नाश, अब मोक्ष महल में होय वास।।

दोहा- विशद भावना व्यक्त की, पूर्ण करो हे नाथ।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, झुका रहे पद माथ।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सुमतिनाथ की वन्दना, करते हम कर जोर।
धीरे-धीरे ही सही, बढ़ें मोक्ष की ओर।।

।। इत्याशीर्वादः ।। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सुमतिनाथ चालीसा

दोहा- नव देवों को पूजते, पाने को शिव धाम।
सुमतिनाथ के पद युगल, करते विशद प्रणाम।।

चौपाई

सुमतिनाथ के पद में जावे, उसकी मति सुमति हो जावे।
प्रभु कहे त्रिभुवन के स्वामी, जन-जन के हैं अन्तर्यामी।।
अनुपम भेष दिगम्बर धारी, जिन की महिमा जग से न्यारी।
वीतराग मुद्रा है प्यारी, सारे जग की तारण हारी।।
नगर अयोध्या मंगलकारी, जन्मे सुमतिनाथ त्रिपुरारी।
पिता मेघरथजी कहलाए, मात मंगला जिनकी गाए।।
वंश रहा इक्ष्वाकु भाई, महिमा जिसकी जग में गाई।
वैजयन्त से चयकर आये, श्रावण शुक्ल दोज शुभ पाए।।
मघा नक्षत्र रहा मनहारी, ब्रह्ममुहूर्त पाए शुभकारी।
चैत्र शुक्ल ग्यारस दिन आया, जन्म प्रभुजी ने शुभ पाया।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाए, जा सुमेरु पर न्हवन कराए।
चकवा चिह्न पैर में पाया, सुमतिनाथ शुभ नाम बताया।।
स्वर्ण रंग तन का शुभ जानो, धनुष तीन सौ ऊँचे मानो।
जाति स्मरण देखकर स्वामी, बने आप मुक्तिपथ गामी।।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी गाई, मघा नक्षत्र पाए सुखदाई।
तेला का व्रत धारण कीन्हे, सहस्र भूप संग दीक्षा लीन्हे।।
गये सहेतुक वन में स्वामी, तरुवर रहा प्रियंगु नामी।
पौष शुक्ल पूनम शुभकारी, हस्त नक्षत्र रहा मनहारी।।

नगर अयोध्या में फिर आए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।
समवशरण तव देव बनाए, दश योजन विस्तार बताए।।
गणधर एक सौ सोलह गाए, गणधर प्रथम वज्र कहलाए।
मुनिवर तीन लाख कहलाए, बीस हजार अधिक बतलाए।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, कर्म नाश कर मुक्ति पाए।
कृपा करो भक्तों पर स्वामी, बनें सभी मुक्ति पथगामी।।
इस जग के सारे सुख पाएँ, अन्त में भव से मोक्ष सिधाएँ।
विनती चरणों विशद हमारी, बनो सभी के प्रभु हितकारी।।
चालिस लाख पूर्व की स्वामी, आयु पाए शिवपद गामी।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अन्तर्यामी।
चैत्र शुक्ल दशमी शुभ गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ति पाई।।
सहस्र मुनि सह मुक्ति पाए, अपने सारे कर्म नशाए।
सीकर जिला रहा शुभकारी, रैवासा में अतिशयकारी।।
प्रतिमा प्रगट हुई मनहारी, सुमतिनाथ की मंगलकारी।
दर्शन प्रभु का है सुखदाई, शांतिदायक है अति भाई।।
जसों का खेड़ा ग्राम बताया, जिला भीलवाड़ा कहलाया।
मूलनायक जिन प्रतिमा सोहे, भव्यों के मन को जो मोहे।।
कई ग्रामों में प्रतिमा प्यारी, शोभित होती है मनहारी।
दर्शन पाते हैं नर-नारी, श्री जिनवर का मंगलकारी।।
जो भी प्रभु का दर्शन पाए, बार-बार दर्शन को आए।
हम भी प्रभु का ध्यान लगाएँ, निज आतम की शांति पाए।।

दोहा- चालीसा चालिस दिन, सद् श्रद्धा के साथ।
शांति मन में हो विशद, बने श्री का नाथ।।

जाप- ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री 1008 सुमतिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज- मात-पिता अरु......)

सुमतिनाथ की करते हैं हम, आरती मंगलकार।
भक्ति भाव से वन्दन करते, चरणों बारम्बार।।
कि आरती करते बारम्बार-2

1. मात मंगला के उर आये, मेघ प्रभु के लाल कहाए।
जन्म अयोध्या नगरी पाए, पद में चकवा चिह्न बताए।।
चार लाख पूरब की आयु, पाये अतिशयकार
कि आरती करते बारम्बार-2

2. अष्ट कर्म को प्रभु नशाए, क्षण में केवलज्ञान जगाए।
अनन्त चतुष्टय प्रभु प्रगटाए, छियालिस मूल गुणों को पाए।।
शत् इन्द्रों ने आकर बोला, प्रभु का जय-जयकार।
कि आरती करते बारम्बार-2

3. दिव्य देशना प्रभु सुनाये, भव्य जीव सद्दर्शन पाए।
सम्यक् चारित्र प्राणी पाये, सम्यक् तप में चित्त लगाए।।
तीन लोकवर्ती जीवों का, किया बड़ा उपकार।
कि आरती करते बारम्बार-2

4. प्रभु की भक्ति करने आये, घृत कपूर के दीप जलाये।
'विशद' भाव से प्रभु गुण गाये, तीन योग से शीश झुकाये।।
चरण शरण में हम भी आये, कर दो प्रभु उद्धार।
कि आरती करते बारम्बार-2

प्रशस्ति

आदि नाम आदीश का, अन्त नाम महावीर।
चौबीसों जिनराज का, करो ध्यान धर धीर।।1।।
जिनवाणी जिनदेव की, करती जग कल्याण।
भाते हैं हम भावना, पाएँ केवल ज्ञान।।2।।
वृषभसेन आदि हुए, गणधर पूज्य महान्।
उनका भी हम कर रहे, भाव सहित गुणगान।।3।।
महावीर भगवान के, गणधर हुए प्रधान।
इन्द्रभूति गौतम कहे, ज्ञानी श्रेष्ठ महान्।।4।।
इसी श्रृंखला में हुए, कई आचार्य विशेष।
महाव्रतों को धारकर, धरे दिगम्बर भेष।।5।।
सदी बीसवीं में हुए, आदिसिन्धु आचार्य।
अंकलीकर कहलाए जो, कहते ऐसा आर्य।।6।।
पट्टाधीश उनके हुए, महावीरकीर्ति आचार्य।
प्रथम शिष्य उनके बने, विमल सिन्धु आचार्य।।7।।
भरत सिन्धु उनके हुए, पट्टाचार्य महान्।
विराग सिन्धु गुरु भ्रात थे, जिनके अति गुणवान।।8।।
द्वय गुरुओं ने किया है, मेरा भी उद्धार।
शिक्षा-दीक्षा दी तथा, दिया सुपद आचार्य।।9।।
उनके शुभ आशीष से, बिगड़े बनते काम।
बिन्दु से सिन्धु किया, विशद सिन्धु दे नाम।।10।।
दो हजार सन् दश रहा, दशें शुक्ल वैशाख।
सुमतिनाथ पूजा लिखी, बढ़े धर्म की साख।।11।।
भारत देश का प्रान्त है, नाम है राजस्थान।
कोटा है सम्भाग यह, किया पूर्ण गुणगान।।12।।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

स्थापना

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क

छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क

बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क

आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क

in vkpk;Z izfr"Bk dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik¡p jgkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkङ्क

तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क

मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क

तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क

हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क

गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क

सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क

गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

रचयिता : ब्र. आस्था दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मन: स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. श्री विशद नवदेवता विधान
29. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
30. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
31. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
32. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
33. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
34. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
35. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
36. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
37. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
38. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
39. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
40. श्री श्रुत स्कंध विधान
41. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
42. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
43. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
44. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
45. श्री याग मण्डल विधान
46. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
47. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
48. विशद पञ्च विधान संग्रह
49. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
50. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
51. विशद सुमतिनाथ विधान
52. विशद संभवनाथ विधान
53 विशद प्रवचन पर्व
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान